



कृषि उद्यमिता से ग्रामीण भारत में आजीविका सुरक्षा

रवींद्र नाथ पडारिया¹, स्वीटी मुखर्जी¹, सिमरन पुंडीर¹, ऐश्वर्या एस.² और प्रीति प्रियदर्शिनी³

॥ ग्रामीण भारत आज तीव्र सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। एक समय था, जब कृषि को ग्रामीण परिवारों की आजीविका का प्रमुख आधार माना जाता था, किंतु वर्तमान परिस्थितियों में यह किसानों और उनके परिवारों की बढ़ती आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं रह गई है। भूमि पर बढ़ते जनसंख्या दबाव, कृषि उत्पादन की बढ़ती लागत, बाजार मूल्यों में निरंतर उतार-चढ़ाव तथा जलवायु परिवर्तन के प्रभावों ने विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए पारंपरिक खेती की लाभप्रदता को कम कर दिया है। दूसरी ओर तकनीकी प्रगति, बेहतर संचार एवं संपर्क सुविधाएं, डिजिटल मंचों का विस्तार तथा बाजारों तक बढ़ती पहुंच ने ग्रामीण क्षेत्रों में आय अर्जित करने के नए अवसर उपलब्ध करवाए हैं। आज की ग्रामीण अर्थव्यवस्था केवल फसल उत्पादन तक सीमित नहीं है। बागवानी, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, कृषि पर्यटन, नर्सरी प्रबंधन, कृषि यंत्र किराया सेवाएं तथा डिजिटल परामर्श सेवाएं ग्रामीण आय के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में उभर रही हैं। गुणवत्तापूर्ण खाद्य उत्पादों, प्रसंस्करित वस्तुओं तथा विशिष्ट कृषि सेवाओं की बढ़ती मांग ने नवाचार अपनाने और नए उद्यम स्थापित करने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए अनेक संभावनाएं उत्पन्न की हैं। परिणामस्वरूप, आजीविका मात्र के लिए की जाने वाली कृषि से उद्यमोन्मुख कृषि एवं ग्रामीण उद्यमिता की ओर ध्यान निरंतर बढ़ रहा है। ॥

ग्रामीण क्षेत्रों में औपचारिक रोजगार की बढ़ती संख्या की तुलना में अभी भी के अवसरों की उपलब्धता, प्रतिवर्ष सीमित है। केवल सरकारी अथवा निजी कार्यबल में शामिल होने वाले शिक्षित युवाओं नौकरियों पर निर्भर रहना दीर्घकाल में न तो

व्यावहारिक है और न ही टिकाऊ। ऐसे में स्वरोजगार तथा उद्यम विकास को आय सृजन और आर्थिक प्रगति के प्रभावी माध्यम के रूप में बढ़ावा देना आवश्यक हो जाता है।

उद्यमिता व्यक्तियों को अवसरों की प्रतीक्षा करने के बजाय स्वयं अवसरों का सृजन

¹भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली; ²भाकृअनुप-केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार; ³बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

करने की क्षमता प्रदान करती है। स्थानीय संसाधनों और बाजार की मांग के आधार पर छोटे-छोटे उद्यम स्थापित करके ग्रामीण युवा एवं किसान न केवल अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं, बल्कि अपने समुदाय के अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर उत्पन्न कर सकते हैं। उद्यम आधारित विकास स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाता है, रोजगार सृजन को बढ़ावा देता है, मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करता है तथा समावेशी विकास को प्रोत्साहित करता है। सफल ग्रामीण उद्यम नवाचार को बढ़ावा देने, संसाधनों के बेहतर उपयोग को सुनिश्चित करने तथा बाहरी आय स्रोतों पर निर्भरता कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कृषि स्टार्टअप, किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), स्वयं सहायता समूह तथा मूल्य संवर्धन आधारित उद्यमों की बढ़ती लोकप्रियता यह दर्शाती है कि आजीविका संबंधी चुनौतियों के समाधान में उद्यमिता की भूमिका निरंतर महत्वपूर्ण होती जा रही है। उपयुक्त नीतिगत समर्थन, प्रशिक्षण, वित्तीय सेवाओं तथा प्रभावी बाजार संपर्क के माध्यम से उद्यमिता ग्रामीण



सफल उद्यम-सोच, नेतृत्व और अवसरों का समन्वय

सारणी: आय विविधीकरण एवं ग्रामीण विकास के लिए संभावित उद्यम अवसर

क्षेत्र	उद्यम अवसर	प्रमुख लाभ
कृषि	बीज उत्पादन	अधिक आय, गुणवत्तापूर्ण बीजों की उपलब्धता तथा बाजार में निरंतर मांग
बागवानी	नर्सरी प्रबंधन	नियमित आय तथा गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री की बढ़ती मांग
पशुपालन	डेरी उद्यम	दैनिक नकद आय, रोजगार सृजन एवं पोषण सुरक्षा
मधुमक्खी पालन	शहद उत्पादन	अतिरिक्त आय, कम भूमि की आवश्यकता तथा फसलों में बेहतर परागण
मशरूम उत्पादन	मशरूम खेती	सीमित स्थान में उत्पादन, शीघ्र आय तथा वर्षभर उत्पादन की संभावना
खाद्य प्रसंस्करण	अचार, जैम, जूस एवं निर्जलित उत्पाद	मूल्य संवर्धन, कटाई उपरांत हानि में कमी तथा बेहतर बाजार मूल्य
मत्स्य पालन	मछली उत्पादन	उच्च उत्पादकता एवं बढ़ती उपभोक्ता मांग
पुष्पोत्पादन	कर्तित पुष्प एवं सजावटी पौधों का उत्पादन	उच्च मूल्य वाला उद्यम तथा शहरी बाजारों में अच्छी संभावनाएं
कृषि सेवाएं	कस्टम हायरिंग सेंटर	कृषि यंत्रों के किराये से आय तथा कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा
कृषि पर्यटन	फार्म पर्यटन एवं मनोरंजन गतिविधियां	आय के विविध स्रोत तथा ग्रामीण रोजगार सृजन
डिजिटल कृषि	कृषि परामर्श एवं आईसीटी आधारित सेवाएं	प्रौद्योगिकी आधारित उद्यमिता एवं विस्तृत बाजार अवसर
जैविक खेती	जैविक उत्पादों का उत्पादन एवं विपणन	प्रीमियम मूल्य तथा स्वास्थ्यवर्धक उत्पादों की बढ़ती मांग
सामूहिक उद्यम	एफपीओ आधारित आदान आपूर्ति, संग्रहण एवं विपणन	पैमाने की अर्थव्यवस्था, बेहतर सौदेबाजी क्षमता तथा बाजार तक बेहतर पहुंच

समृद्धि और सतत विकास की एक सशक्त आधारशिला बन सकती है।

आजीविका रणनीति के रूप में उद्यमिता

उद्यमिता से आशय अवसरों की पहचान करने, उपलब्ध संसाधनों को संगठित करने, सोच-समझकर जोखिम उठाने तथा नवाचार के माध्यम से मूल्य सृजित करने की क्षमता से है। ग्रामीण विकास के संदर्भ में उद्यमिता को आज एक प्रभावी आजीविका रणनीति के रूप में देखा जा रहा है, जो आय में वृद्धि, जोखिमों में कमी तथा जीवन स्तर में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

पारंपरिक आजीविका गतिविधियां प्रायः आय के एक ही स्रोत पर निर्भर होती हैं, जबकि उद्यमिता विविधीकरण और नवाचार को प्रोत्साहित करती है। उदाहरण के लिए, कोई किसान दूध का प्रसंस्करण कर मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार करता है, उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती करता है, नर्सरी स्थापित करता है, मधुमक्खी पालन शुरू करता है अथवा एकीकृत कृषि प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न कृषि उद्यमों को जोड़कर कार्य करता है, तो वह मूलतः आजीविका अर्जन के लिए उद्यमशील दृष्टिकोण अपना रहा होता है।

उद्यमिता व्यक्तियों को रोजगार खोजने वाले के बजाय रोजगार सृजित करने वाला



ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार



देश की महिलाएं लिख रही हैं आत्मनिर्भरता की नयी परिभाषा

- दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत दिया जा रहा है आधुनिक कृषि तकनीकों का प्रशिक्षण
- आधुनिक खेती से आय में भी हो रही है बढ़ोतरी
- ग्रामीण महिलाएं बन रही हैं आत्मनिर्भरता की मिसाल



सरकारी प्रयासों से आत्मनिर्भरता की ओर

बनाती है। यह उन्हें बदलती बाजार परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढालने, उभरते अवसरों का लाभ उठाने तथा आर्थिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम बनाती है। इसके अतिरिक्त, उद्यम आधारित गतिविधियां परिवार के अन्य सदस्यों और स्थानीय समुदाय के लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर उत्पन्न करती हैं, जिससे

व्यापक ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिलता है।

सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में अग्रसर ग्रामीण भारत के लिए उद्यमिता आजीविका में सुधार, स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने तथा नवाचार, पहल और उद्यमशीलता पर आधारित समृद्ध भविष्य के निर्माण का एक सशक्त माध्यम है।

सफलता गाथा-1

समेकित जैविक खेती से समृद्धि की ओर

दिल्ली के कुल्लकपुर गांव के श्री अभिषेक धामा ने पारंपरिक खेती को नवाचार आधारित, लाभकारी और टिकाऊ कृषि उद्यम में बदलकर एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है। लगभग 16 हैक्टर भूमि पर उन्होंने ऊर्ध्वाधर (वर्टिकल) एवं बहुस्तरीय खेती, डेरी, औषधीय एवं सुगंधित फसलों तथा जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशकों के स्वउत्पादन पर आधारित समेकित जैविक खेती मॉडल विकसित किया है। इनके बायो गैस संयंत्र से प्राप्त स्लरी खेतों की उर्वरता बढ़ाने के साथ रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता भी कम करती है। अधिक आय प्राप्त करने के लिए इन्होंने स्टीविया, जेरेनियम, वेटीवर, कैमोमाइल और मोरिंगा जैसी उच्च मूल्य वाली फसलों को अपनाया तथा पूसा सनफ्रिज जैसी आधुनिक तकनीक का उपयोग कर फसलों की गुणवत्ता बनाए रखी। अधिरायांश ऑर्गेनिक्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के माध्यम से वे सैकड़ों किसानों को जैविक बाजारों से जोड़ते हुए सामूहिक विपणन और मूल्य संवर्धन को बढ़ावा दे रहे हैं। इनकी नवाचारी कृषि प्रणाली के लिए उन्हें आईएआरआई इनोवेटिव फार्मर अवार्ड सहित कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनकी सफलता यह दर्शाती है कि नवाचार, टिकाऊ खेती और उद्यमिता के माध्यम से कृषि को लाभकारी आजीविका का सशक्त माध्यम बनाया जा सकता है

चुनौतियां

आजीविका में वे सभी क्षमताएं, संसाधन, परिसंपत्तियां तथा गतिविधियां शामिल होती हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति अपनी आय अर्जित करता है और अपने जीवन-निर्वाह एवं कल्याण को सुनिश्चित करता है। भारत के करोड़ों ग्रामीण परिवारों की आजीविका कृषि तथा उससे संबंधित गतिविधियों पर आधारित है। फिर भी सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय तथा संस्थागत कारणों के चलते स्थिर और टिकाऊ आजीविका सुनिश्चित करना आज भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। इन चुनौतियों को समझना ऐसी प्रभावी रणनीतियों के निर्माण के लिए आवश्यक है, जो आय सुरक्षा बढ़ाने और लोगों की अनुकूलन क्षमता को सुदृढ़ करने में सहायक हों।

कृषि भूमि का विखंडन

भारतीय कृषि के समक्ष प्रमुख चुनौतियों में से एक कृषि भूमि का निरंतर विखंडन और उसका छोटा आकार है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी पारिवारिक बंटवारे के कारण कृषि भूमि छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित होती गई है, जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश किसानों के खेत आकार में छोटे और बिखरे हुए हो गए हैं। ऐसी स्थिति में कृषि को आर्थिक रूप से लाभकारी बनाना कठिन हो जाता है।

छोटे किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने, यंत्रीकरण में निवेश करने, उत्पादन लागत को कम करने तथा बाजार तक प्रभावी पहुंच स्थापित करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके साथ ही, सीमित भूमि उपलब्धता, उत्पादन क्षमता और आय अर्जन की संभावनाओं को भी प्रभावित करती है, जिससे केवल फसल उत्पादन के आधार पर परिवार की बढ़ती आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना कठिन हो जाता है। परिणामस्वरूप, अनेक किसान परिवार पशुपालन, बागवानी, कृषि प्रसंस्करण तथा अन्य उद्यमशील गतिविधियों को अतिरिक्त आय के स्रोत के रूप में अपनाने लगे हैं, ताकि उनकी आय में वृद्धि हो सके और आजीविका अधिक सुरक्षित एवं स्थिर बन सके।

जलवायु संबंधी अनिश्चितताएं

कृषि आज भी प्राकृतिक संसाधनों और मौसम की परिस्थितियों पर काफी हद तक निर्भर है। अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, अत्यधिक तापमान तथा असामयिक

मौसम जैसी घटनाओं में वृद्धि ने ग्रामीण आजीविका को अधिक संवेदनशील बना दिया है। फसलों की क्षति, उत्पादकता में कमी, कीट एवं रोगों का प्रकोप तथा प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण किसानों को आर्थिक हानि पहुंचाते हैं।

जलवायु परिवर्तन से जुड़े जोखिमों का प्रभाव विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों पर अधिक पड़ता है। इनके पास वित्तीय संसाधन और वैकल्पिक व्यवस्थाएं सीमित होती हैं। ऐसी परिस्थितियों में आय के विविध स्रोत विकसित करना तथा किसी एक गतिविधि पर निर्भरता कम करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

बाजार के उतार-चढ़ाव

अच्छा उत्पादन होने के बावजूद किसानों को हमेशा उचित लाभ प्राप्त हो, यह आवश्यक नहीं है। कृषि बाजारों में कीमतों का उतार-चढ़ाव, मौसमी अधिक उत्पादन, भंडारण सुविधाओं की कमी तथा बिचौलियों की प्रमुख भूमिका जैसी समस्याएं अक्सर देखने को मिलती हैं। नकदी की तत्काल आवश्यकता या भंडारण के अभाव में किसानों को कई बार अपनी उपज कम कीमत पर बेचनी पड़ती है।

इसके अतिरिक्त, सीमित सौदेबाजी क्षमता और बाजार संबंधी जानकारी की कमी भी किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्त करने से वंचित कर देती है। ऐसी परिस्थितियां मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण, ब्रांडिंग, प्रत्यक्ष विपणन तथा किसान समूहों एवं उत्पादक संगठनों के माध्यम

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार

विकसित भारत - जी राम जी

— आत्मनिर्भर गांव का संकल्प —

महिलाओं के लिए विकसित भारत – जी राम जी क्यों खास है?

महिलाओं को SHG के जरिए काम और नेतृत्व मिलेगा
साथ ही बहनों के लिए स्किल सेंटर, शेड निर्माण और हाट जैसे कार्य भी किए जाएंगे

स्वयं सहायता समूह से ग्रामीण समृद्धि

से सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

रोजगार के सीमित अवसर

ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर शिक्षित युवाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है, लेकिन रोजगार के अवसर उसी अनुपात में नहीं बढ़ पाए हैं। कृषि क्षेत्र अकेले बढ़ती श्रमशक्ति

को समाहित करने में सक्षम नहीं है, जबकि विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों में भी पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं हैं।

फलस्वरूप, अनेक ग्रामीण युवा बेरोजगारी का सामना करते हैं या कम आय वाले तथा अस्थायी कार्यों को अपनाने के लिए विवश हो जाते हैं। रोजगार के अवसरों और उपलब्ध मानव संसाधन के बीच यह असंतुलन आर्थिक असुरक्षा और निराशा को जन्म देता है। उद्यमिता को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादक रोजगार के नए अवसर सृजित किए जा सकते हैं।

पलायन और अल्प रोजगार

पर्याप्त आजीविका अवसरों के अभाव में अनेक ग्रामीण लोग रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं। यद्यपि इससे अस्थायी आय प्राप्त हो सकती है, लेकिन अक्सर उन्हें असुरक्षित रोजगार, कठिन जीवन परिस्थितियों और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मौसमी पलायन परिवारिक जीवन और कृषि कार्यों को भी प्रभावित कर सकता है।

जो लोग ग्रामीण क्षेत्रों में ही रहते हैं, उनमें से अनेक अल्परोजगार की स्थिति का सामना करते हैं, जहां उनकी क्षमता, समय और कौशल का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता। उद्यमिता इस समस्या का एक प्रभावी विकल्प प्रस्तुत

सफलता गाथा-2

मूल्य संवर्धन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाना

हरियाणा के गुरुग्राम जिले के चंदू गांव की श्रीमती पूजा शर्मा ने एक छोटे से स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) को सफल महिला-नेतृत्व वाले खाद्य प्रसंस्करण उद्यम में बदल दिया। क्षितिज स्वयं सहायता समूह की अध्यक्ष के रूप में इन्होंने वर्ष 2018 में 'जिंग-एन-जेस्ट' नामक उद्यम की स्थापना की, जहां कृषि विज्ञान केंद्र (आईएआरआई), गुरुग्राम से प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर सोमनट, श्री अन्न आधारित कुकीज तथा अन्य पौष्टिक खाद्य उत्पाद तैयार किए जाते हैं। बाजरा, अलसी और प्राकृतिक मिठास जैसे स्वास्थ्यवर्धक अवयवों के उपयोग तथा प्रभावी विपणन रणनीति के कारण इनके उत्पाद दिल्ली-एनसीआर के प्रमुख रिटेल स्टोर्स, आतिथ्य प्रतिष्ठानों और सरकारी संस्थानों तक पहुंच चुके हैं। व्यावसायिक सफलता के साथ-साथ श्रीमती शर्मा ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण की भी प्रेरणा स्रोत बनी हैं। इन्होंने लगभग 150 महिलाओं को जोड़ते हुए 9 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया तथा 1,000 से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षण देकर उनमें से अनेक को खाद्य प्रसंस्करण आधारित उद्यम स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। इनकी सफलता यह दर्शाती है कि मूल्य संवर्धन, सामूहिक प्रयास, कौशल विकास और प्रभावी विपणन के माध्यम से महिलाओं के लिए टिकाऊ आजीविका, बेहतर पोषण और आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

करती है। यह लोगों को अपने ही समुदाय में सार्थक आर्थिक अवसर सृजित करने में सक्षम बनाती है।

विविध उद्यमों, स्थानीय स्तर पर मूल्य संवर्धन तथा बाजारोन्मुख उत्पादन प्रणालियों को बढ़ावा देकर उद्यमिता मजबूरी में होने वाले पलायन को कम कर सकती है और अधिक स्थिर तथा टिकाऊ आजीविका सुनिश्चित करने में योगदान दे सकती है।

आजीविका सुरक्षा के लिए उद्यमिता आय के स्रोतों में विविधता

उद्यमिता ग्रामीण परिवारों को केवल फसल उत्पादन पर निर्भर रहने के बजाय आय के अनेक स्रोत विकसित करने का अवसर प्रदान करती है। दुग्ध उत्पादन, मधुमक्खी पालन, नर्सरी प्रबंधन, खाद्य प्रसंस्करण तथा कृषि पर्यटन जैसी गतिविधियां अतिरिक्त आय के स्रोत उपलब्ध करवाती हैं और आजीविका को अधिक सुरक्षित एवं स्थिर बनाती हैं।

रोजगार सृजन

उद्यम आधारित गतिविधियां परिवार के सदस्यों तथा स्थानीय समुदाय के लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करती हैं। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों से जुड़े लघु उद्यम ग्रामीण श्रमशक्ति को उत्पादक कार्यों में संलग्न करने, बेरोजगारी को कम करने तथा स्थानीय आर्थिक विकास को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जोखिमों में कमी

किसी एक ही गतिविधि या आय स्रोत पर अत्यधिक निर्भरता परिवारों को उत्पादन



महिला कृषकों का उद्यमिता में बढ़ रहा नेतृत्व

तथा बाजार संबंधी जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील बना देती है। उद्यमिता कृषि एवं गैर-कृषि गतिविधियों के विविधीकरण को प्रोत्साहित करती है, जिससे फसल हानि, कीमतों में उतार-चढ़ाव तथा जलवायु संबंधी अनिश्चितताओं के प्रभाव को कम किया जा सकता है। इस प्रकार यह आजीविका को अधिक सुरक्षित और लचीला बनाती है।

मूल्य संवर्धन एवं बाजार से बेहतर जुड़ाव

उद्यमी प्रसंस्करण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग तथा प्रत्यक्ष विपणन के माध्यम से कृषि उत्पादों के मूल्य में वृद्धि करते हैं। इससे किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त होता है, कटाई के बाद होने वाली हानियों में कमी आती है तथा उपभोक्ताओं

और बाजारों के साथ उनका जुड़ाव मजबूत होता है। परिणामस्वरूप आय बढ़ाने और बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति मजबूत करने में सहायता मिलती है।

महिलाओं और युवाओं का सशक्तिकरण

उद्यमिता महिलाओं और युवाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने तथा निर्णय-निर्माण की प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी करने का अवसर प्रदान करती है। यह उनके ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास करती है, जिससे वे परिवार और समाज के विकास में अधिक प्रभावी भूमिका निभा पाते हैं। साथ ही, उद्यमिता उन्हें नए अवसरों का लाभ उठाने, अपनी क्षमताओं का बेहतर उपयोग करने तथा सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति में सार्थक योगदान देने के लिए प्रेरित करती है।

सामूहिक उद्यमिता की भूमिका

यद्यपि व्यक्तिगत उद्यमिता का अपना महत्व है, किंतु सामूहिक उद्यमिता के माध्यम से अधिक व्यापक लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं तथा आर्थिक अवसरों का विस्तार किया जा सकता है। किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ), सहकारी समितियां, स्वयं सहायता समूह तथा किसान समूह छोटे उत्पादकों को संगठित होकर कार्य करने और उन चुनौतियों का समाधान करने में सहायता करते हैं, जिनका सामना व्यक्तिगत स्तर पर करना कठिन होता है।

संसाधनों के सामूहिक उपयोग से किसान कम लागत पर कृषि आदान प्राप्त कर सकते हैं, आधुनिक तकनीकों तक पहुंच बना सकते हैं, सामूहिक विपणन कर सकते हैं तथा अपनी उपज के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने हेतु प्रभावी ढंग से सौदेबाजी कर सकते

सफलता गाथा-3

मशरूम उद्यमिता के माध्यम से महिला सशक्तिकरण

बिहार के नालंदा जिले की श्रीमती अनीता कुमारी, जिन्हें 'बिहार की मशरूम लेडी' के नाम से जाना जाता है, ने मशरूम उत्पादन को एक सफल आजीविका उद्यम में बदलते हुए सैकड़ों ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाया है। गृह विज्ञान में स्नातक तथा माधोपुर फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (एफपीओ) की निदेशक के रूप में इन्होंने मशरूम स्पॉन उत्पादन, खेती, प्रसंस्करण और विपणन पर आधारित कम लागत वाली समेकित प्रणाली विकसित की। कम लागत वाले मशरूम उत्पादन कक्ष और स्थानीय संसाधनों की सहायता से इन्होंने वर्षभर ऑयस्टर एवं मिल्की मशरूम का उत्पादन संभव बनाया। आय बढ़ाने के लिए इन्होंने मशरूम पाउडर और अचार जैसे मूल्य संवर्धित उत्पाद विकसित किए तथा एफपीओ के माध्यम से सामूहिक विपणन और प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा अनेक महिलाओं और छोटे किसानों को मशरूम उद्यम अपनाने के लिए प्रेरित किया। इनका मॉडल कृषि अवशेषों को आय के स्रोत में बदलने, पर्यावरण अनुकूल खेती को बढ़ावा देने तथा कम भूमि और कम निवेश में रोजगार सृजित करने का उत्कृष्ट उदाहरण है। आईएआरआई इनोवेटिव फार्मर अवार्ड सहित अनेक राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित श्रीमती अनीता कुमारी की सफलता यह सिद्ध करती है कि नवाचार, कौशल विकास और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की आजीविका और आत्मनिर्भरता को सशक्त बनाया जा सकता है।

हैं। सामूहिक उद्यमों के माध्यम से पैमाने की अर्थव्यवस्था का लाभ मिलता है, लेन-देन की लागत कम होती है तथा बाजार में किसानों की सौदेबाजी क्षमता मजबूत होती है।

इसके अतिरिक्त, सामूहिक संस्थाएं किसानों को ऋण सुविधाओं, सरकारी योजनाओं, तकनीकी परामर्श सेवाओं तथा नए बाजार अवसरों तक पहुंच बनाने में सहायता करती हैं। देश के विभिन्न भागों के अनुभव यह दर्शाते हैं कि संगठित किसान समूह, व्यक्तिगत किसानों की तुलना में मूल्य शृंखलाओं से बेहतर ढंग से जुड़ पाते हैं तथा अधिक टिकाऊ और सफल उद्यम स्थापित करने में सक्षम होते हैं।

कृषि उद्यमियों के लिए भविष्य के आवश्यक कौशल

कृषि और व्यवसाय के क्षेत्र में तेजी से हो रहे परिवर्तनों के कारण ग्रामीण उद्यमियों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे निरंतर अपने ज्ञान और क्षमताओं का विकास करते रहें, ताकि वे प्रतिस्पर्धी और सक्षम बने रह सकें। उत्पादन संबंधी तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ भविष्य के उद्यमियों को अपने उद्यमों के प्रभावी संचालन और विस्तार के लिए विविध प्रकार के कौशलों की आवश्यकता होगी।

आज के समय में डिजिटल साक्षरता का महत्व लगातार बढ़ रहा है। सूचना प्राप्त करने,



समेकित कृषि प्रणाली से लाभान्वित होती खेती

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करने, डिजिटल भुगतान प्रणालियों को अपनाने तथा सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स के माध्यम से ग्राहकों से जुड़ने के लिए डिजिटल कौशल आवश्यक हो गए हैं। इसी प्रकार, वित्तीय प्रबंधन कौशल उद्यमियों को लेखा-जोखा रखने, नकदी प्रवाह का प्रबंधन करने, लाभ-हानि का आकलन

करने तथा निवेश संबंधी बेहतर निर्णय लेने में सहायता प्रदान करते हैं।

प्रभावी ब्रांडिंग और आकर्षक पैकेजिंग किसी उत्पाद की पहचान बनाने, उसकी बाजार में स्वीकार्यता बढ़ाने तथा उपभोक्ताओं को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ऑनलाइन विपणन और डिजिटल बाजारों के विस्तार के साथ ई-कॉमर्स संबंधी कौशल भी व्यापक ग्राहक वर्ग तक पहुंच बनाने और बाजार अवसरों का लाभ उठाने के लिए आवश्यक होते जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, आंकड़ों और बाजार संबंधी सूचनाओं का उपयोग कर निर्णय लेने की क्षमता उद्यमियों को बदलती प्रवृत्तियों को समझने, उत्पादन को बेहतर बनाने तथा उपभोक्ताओं की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करने में सहायता करती है।

वर्तमान समय में जलवायु जोखिम प्रबंधन कौशल भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनके माध्यम से उद्यमी मौसम की अनिश्चितताओं, संसाधनों की सीमाओं तथा पर्यावरणीय चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना कर सकते हैं। साथ ही, नेतृत्व क्षमता, प्रभावी संचार कौशल और नेटवर्किंग की योग्यता भी उतनी ही आवश्यक है। ये विभिन्न हितधारकों के साथ सहयोग बढ़ाने, संस्थागत सहायता प्राप्त करने तथा मूल्य शृंखलाओं में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने में मदद करती हैं।

सफल आजीविका उद्यमिता के लिए रणनीतियां

किसी भी उद्यम की सफलता सुविचारित योजना, सही निर्णयों तथा निरंतर सीखने की प्रक्रिया पर निर्भर करती है। सफल आजीविका उद्यमिता के लिए निम्न रणनीतियां विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं:

- स्थानीय संसाधनों, उपलब्ध कौशल तथा बाजार की मांग के अनुरूप उद्यम का चयन करना।
- निवेश से पूर्व बाजार का समुचित अध्ययन और मूल्यांकन करना।
- प्रशिक्षण, अध्ययन भ्रमण तथा विशेषज्ञ परामर्श के माध्यम से तकनीकी ज्ञान प्राप्त करना।
- विपणन और ग्राहकों से जुड़ाव बढ़ाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा सोशल मीडिया का उपयोग करना।
- मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग पर विशेष ध्यान देना।
- जोखिम कम करने और आय को स्थिर बनाए रखने के लिए विभिन्न उद्यमों को अपनाना।
- किसानों, संस्थानों, वित्तीय एजेंसियों तथा खरीदारों के साथ मजबूत नेटवर्क विकसित करना।
- नवाचार को अपनाना तथा बदलती बाजार और पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालना।

ये रणनीतियां उद्यम की सफलता की संभावनाओं को बढ़ाने के साथ-साथ उसकी दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने में भी सहायक होती हैं।

इन भविष्य उन्मुख कौशलों का विकास ऐसे नवाचारी, सुदृढ़ और टिकाऊ उद्यमों के निर्माण के लिए आवश्यक है, जो बदलते आर्थिक परिवेश में सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकें।

सरकारी पहलें

ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता और आजीविका विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा अनेक योजनाएं और कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। ये पहलें वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन तथा बाजार से जुड़ाव के माध्यम से उद्यमियों को सशक्त बनाने का कार्य करती हैं:

- **प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकीकरण योजना:** यह योजना सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों को वित्तीय सहायता, क्षमता विकास तथा विपणन सहयोग प्रदान करती है।
- **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम:** ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना के लिए ऋण आधारित अनुदान (सब्सिडी) उपलब्ध करवाता है।
- **स्टार्टअप इंडिया:** नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए नीतिगत सहायता, इन्क्यूबेशन सुविधाएं तथा वित्तपोषण के अवसर प्रदान करता है।

अवसर

- डिजिटल कृषि सेवाएं तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित परामर्श सेवाएं।
- कृषि यंत्रों को किराये पर उपलब्ध करवाने वाले कस्टम हायरिंग सेंटर।
- मधुमक्खी पालन एवं शहद आधारित उद्यम।
- सीमित भूमि एवं संसाधनों में आय अर्जित करने हेतु मशरूम उत्पादन।
- बीज उत्पादन एवं नर्सरी प्रबंधन आधारित उद्यम।
- खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धित कृषि उत्पादों का उत्पादन।
- कृषि पर्यटन (एग्री-टूरिज्म) आधारित उद्यम, जो उपभोक्ताओं को कृषि और ग्रामीण जीवन का अनुभव प्रदान करते हैं।
- स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए जैविक एवं प्राकृतिक कृषि उत्पादों का उत्पादन और विपणन।



डिजिटल परामर्श से आधुनिक बनते कृषक

- **स्टैंड-अप इंडिया:** महिला उद्यमियों तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के उद्यमियों को बैंक ऋण उपलब्ध करवाने में सहायता करता है।
- **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना:** लघु उद्यमियों और सूक्ष्म उद्यमों को बिना किसी जमानत के ऋण उपलब्ध करवाती है।
- **राष्ट्रीय पशुधन मिशन:** वित्तीय एवं तकनीकी सहायता के माध्यम से पशुधन आधारित उद्यमों को प्रोत्साहित करता है।
- **बागवानी के एकीकृत विकास हेतु मिशन:** बागवानी विकास, नर्सरी स्थापना, संरक्षित खेती तथा कटाई उपरांत प्रबंधन को समर्थन प्रदान करता है।
- **10,000 किसान उत्पादक संगठन गठन एवं संवर्धन योजना:** किसानों के सामूहिक संगठनों को सुदृढ़ बनाकर बाजार तक पहुंच, मूल्य संवर्धन तथा आय वृद्धि को बढ़ावा देती है।
- **दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन:** स्वयं सहायता समूहों, महिला-नेतृत्व वाले उद्यमों तथा आजीविका के विविधीकरण को प्रोत्साहित करता है।
- **एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिजनेस सेंटर:** कृषि स्नातकों और कृषि पेशेवरों को कृषि आधारित उद्यम तथा परामर्श सेवाएं स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

ग्रामीण युवाओं और महिलाओं के लिए उभरते अवसर

तकनीकी प्रगति और उपभोक्ताओं की बदलती पसंद ने ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता के अनेक नए अवसरों को जन्म दिया है। ये अवसर न केवल आय में वृद्धि की संभावनाएं प्रदान करते हैं, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देते हैं।

ये अवसर ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने, उद्यम स्थापित करने तथा स्थानीय स्तर पर आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान देने के लिए व्यापक संभावनाएं प्रदान करते हैं।

भावी दिशा

उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए ऐसे अनुकूल वातावरण की आवश्यकता है जो नवाचार और उद्यम विकास को प्रोत्साहित कर सके। इसके लिए क्षमता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से भावी उद्यमियों को तकनीकी, प्रबंधकीय तथा विपणन संबंधी कौशलों से सुसज्जित करना आवश्यक है। साथ ही, उद्यमों की स्थापना और विस्तार के लिए सुलभ ऋण तथा अन्य वित्तीय सेवाओं तक आसान पहुंच सुनिश्चित की जानी चाहिए।

डिजिटल प्रौद्योगिकियों, आधुनिक उत्पादन पद्धतियों तथा बाजार सूचना प्रणालियों को अपनाकर उद्यमों की प्रतिस्पर्धात्मकता और कार्यकुशलता में वृद्धि की जा सकती है। इसके साथ ही, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), सहकारी समितियों तथा स्वयं सहायता समूहों जैसी सामूहिक संस्थाओं को सुदृढ़ बनाना भी आवश्यक है, ताकि किसानों और उद्यमियों की बाजार, वित्तीय संसाधनों तथा तकनीकी सेवाओं तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित हो सके।

ग्रामीण क्षेत्रों में सशक्त उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए सरकारी संस्थानों, अनुसंधान संगठनों, वित्तीय संस्थाओं, निजी क्षेत्र तथा सामुदायिक संगठनों के बीच समन्वित और सहयोगात्मक प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण होंगे। ऐसे सामूहिक प्रयास ग्रामीण उद्यमिता को नई दिशा देने के साथ-साथ समावेशी और सतत विकास को भी गति प्रदान करेंगे।